# Thematic Maps

Dr. Sabiha Khan

- A thematic map shows the spatial distribution of one or more specific data themes for selected geographic areas. The map may be qualitative in nature (e.g., predominant farm types) or quantitative (e.g., percentage population change).
- A thematic map is also called a special-purpose, single-topic, or statistical map. A thematic map focuses on the spatial variability of a specific distribution or theme.
- All thematic maps are composed of two important elements: a base map and statistical data.

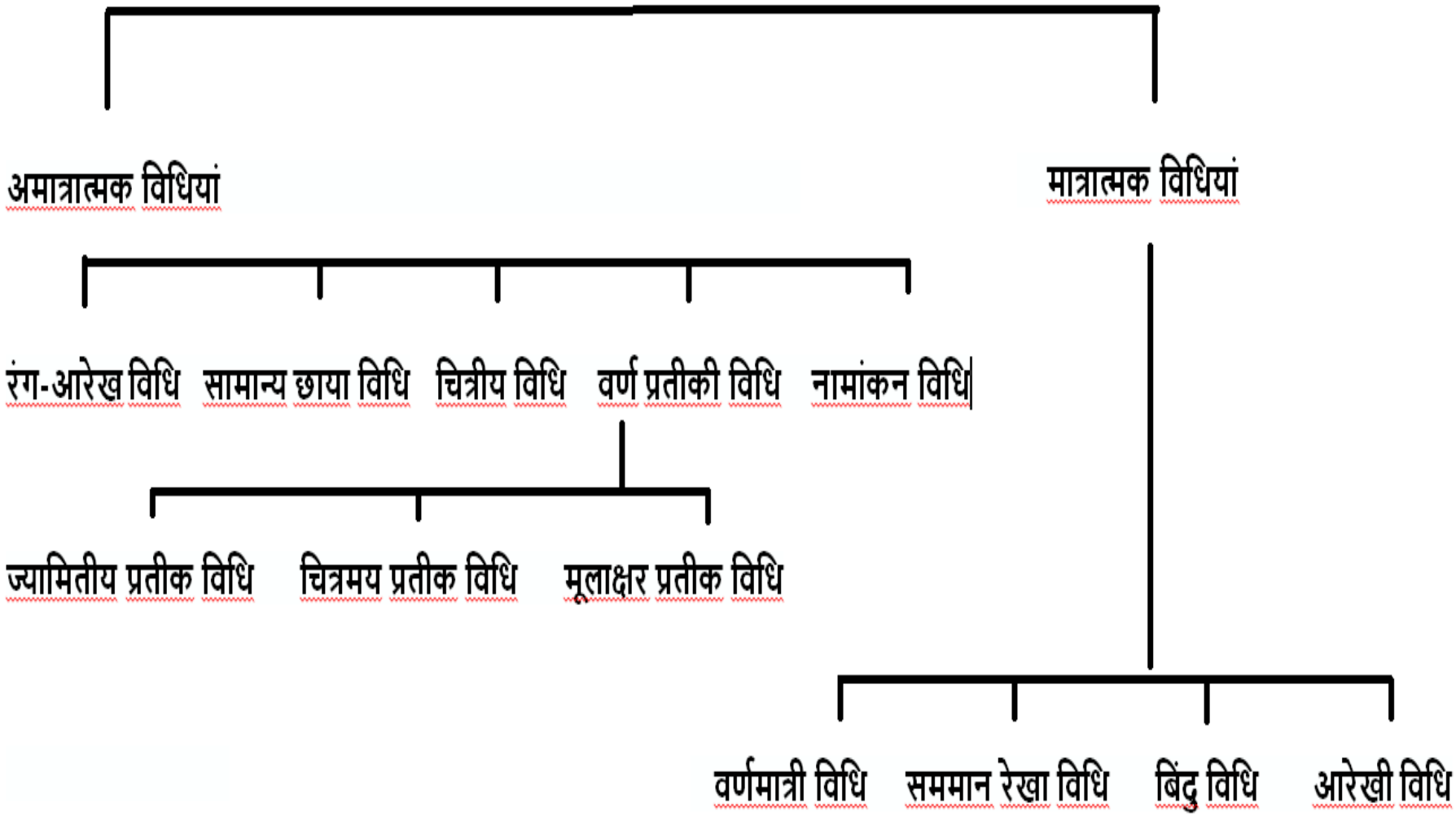
अमात्रात्मक विधियां
मात्रात्मक विधियां
रंग-आरेख विधि
सामान्य छाया विधि
चित्रीय विधि
वर्ण प्रतीकी विधि
नामांकन विधि
ज्यामितीय प्रतीक विधि
चित्रमय प्रतीक विधि
मूलाक्षर प्रतीक विधि
वर्णमात्री विधि
सममान रेखा विधि
बिंदु विधि
आरेखी विधि

1. **रंग-आरेख विधि (Colour –Patch Method)-**

- **अन्य नाम**
  - **(रंगारेख मानचित्र )Colour –Patch Map,**
  - **(रंगक-मानचित्र) Tint map,**
  - **(वर्ण मानचित्र) Colour map,**
  - **(कोरोक्रोमैटिक मानचित्र ) Chorochromatic map.**
- **प्राकृतिक प्रदेशों राजनीतिक एवं प्रशासनिक क्षेत्रों भूमि उपयोग के प्रकार भूवैज्ञानिक क्षेत्रों प्राकृतिक वनस्पति एवं मिट्टी के प्रकारों को प्रदर्शित करने के लिए प्रयोग में लाया जाता है।**

- रंगों के प्रयोग की दृष्टि से इन्हें दो भागों में वर्गीकृत किया जा सकता है
- प्रथम प्रकार के रंग आरेख मानचित्र में कोई भी रंग अपनी सुविधा एवं रूचि के अनुसार प्रयोग किया जा सकता है जैसे कि संसार के राजनीतिक मानचित्र राज्य जनपद तहसील इत्यादि को प्रदर्शित करने के लिए इसका प्रयोग किया जाता है।
- द्वितीय प्रकार के रंग आरेख मानचित्र में केवल अंतरराष्ट्रीय मान्यता के अनुसार निर्धारित रंगों का प्रयोग किया जाता है उदाहरण : प्राकृतिक प्रदेशों -पर्वतीय क्षेत्रों को गहरे भूरे रंग से ,पठारी भागों को हल्के भूरे रंग से तथा मैदानी भागों को पीले रंग से दिखाया जाता है।

**Source: www.google.com**

- कभी-कभी रंग आरेख मानचित्र में केवल एक ही रंग का प्रयोग करके विभिन्न  छायाओं के द्वारा वितरण के क्षेत्रों को प्रदर्शित किया जाता है, इन्हें मानचित्रों को स्तरित मानचित्र (layered map)या स्तर रंगत मानचित्र (layer tint map) भी कहते हैं।
- उदाहरण वनस्पति के प्रकारों को प्रदर्शित करने के लिए हरे रंग का प्रयोग किया जाता है तथा समुच्चय रेकी मानचित्र को प्रदर्शित करने के लिए भूरे रंग का प्रयोग किया जाता है

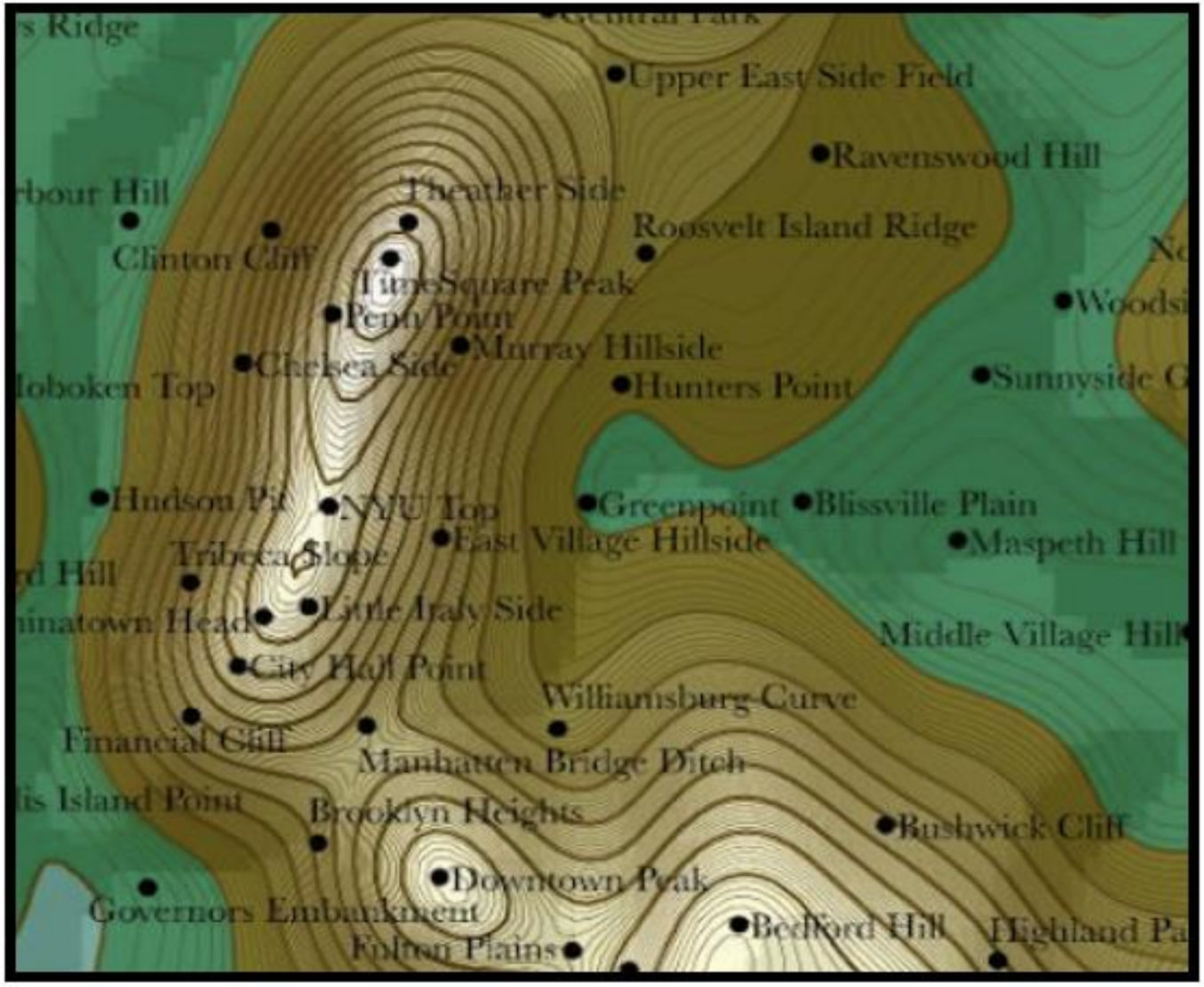


**Source: www.google.com**

**2. सामान्य छाया विधि** (Simple Shade Method):

- **यह विधि रंग आरेख विधि के समान ही होती है केवल इतना अंतर होता है रंगो के स्थान पर यहां पर काली स्याही का प्रयोग किया जाता है।**
- **इस मानचित्र का उद्देश्य भिन्न भिन्न प्रकार के क्षेत्रों को दिखलाना होता है। इस मानचित्र में छाया ओं का प्रयोग इस प्रकार किया जाता है कि प्रत्येक कटिबंध अपने समीपवर्ती कटिबंध से भिन्न नजर आए।**
- **उदाहरण ग्रेट ब्रिटेन में कृषि भूमि उपयोग।**
- **जलवायु कटिबंध, कृषि पेटियां, फसल क्षेत्र, मिट्टी के प्रकार ,औद्योगिक एवं खनिज क्षेत्र इस मानचित्र के द्वारा प्रदर्शित किए जा सकते हैं।**

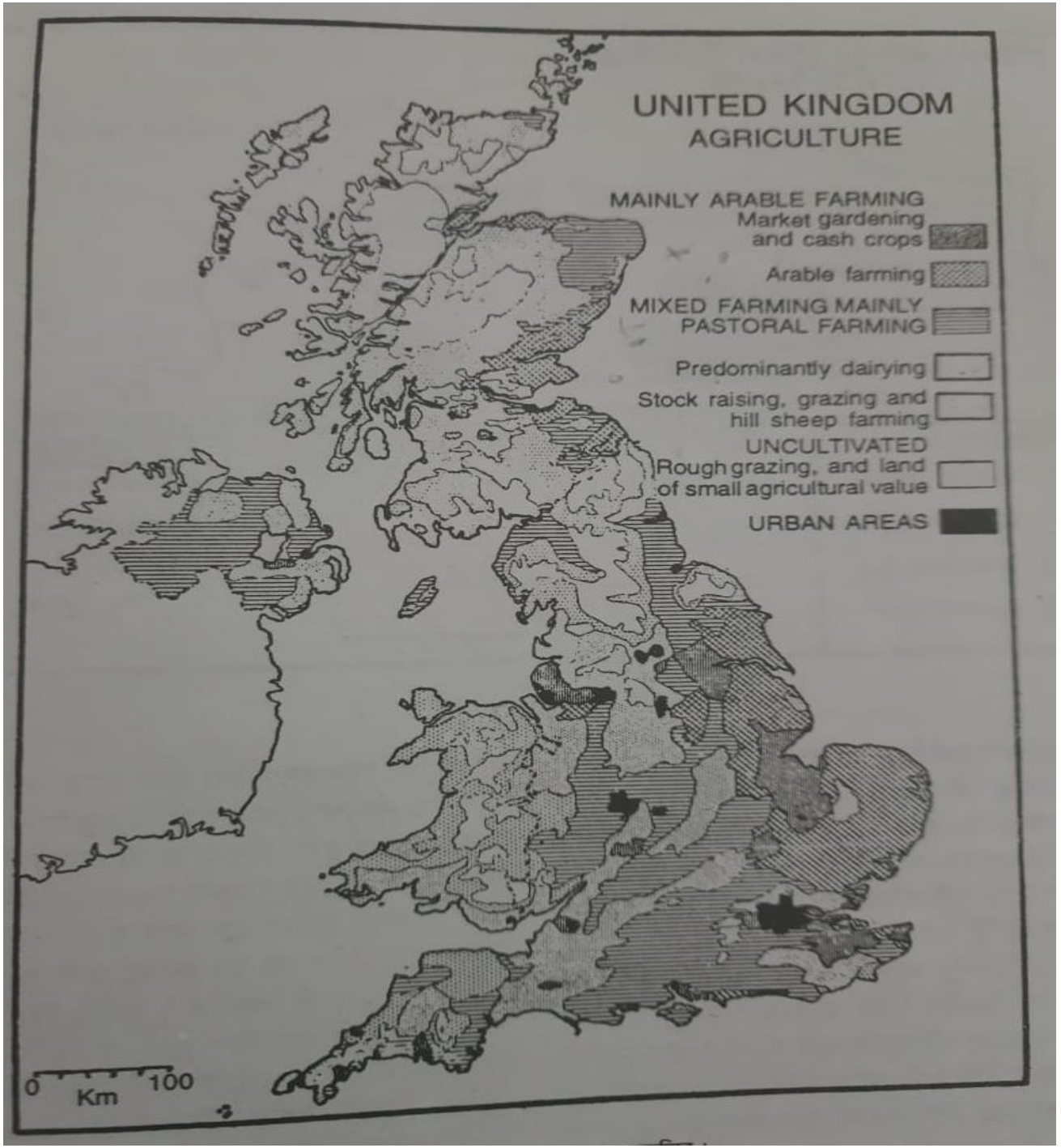
UNITED KINGDOM
AGRICULTURE
MAINLY ARABLE FARMING
Market gardening and cash crops
Arable farming
MIXED FARMING MAINLY PASTORAL FARMING
Predominantly dairying
Stock raising, grazing and hill sheep farming
UNCULTIVATED
Rough grazing, and land of small agricultural value
URBAN AREAS
0
Km
100

- 3. **चित्रीय विधि (Pictorial Method):**
- **इस प्रकार के मानचित्र में चित्रों का प्रयोग किया जाता है इस विधि में जिन जिन वस्तुओं के स्थान क्षेत्र या वितरण दिखला ने होते हैं उन वस्तुओं के वास्तविक फोटो चित्र पर आधारित रेखा चित्रों को मानचित्र में यथा स्थान बना दिया जाता है किसी देश के दर्शनीय स्थानों पर्यटक केंद्रों वेशभूषा के प्रकारों जनजातियों तथा ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक वैभव को इस विधि के द्वारा प्रदर्शित किया जा सकता है**

# Tourist Map of Rajasthan:

Source: www.google.com

- 4. **वर्ण प्रतीकी विधि (Choro-schematic or symbol method):**
- **जब मानचित्र को प्रतीको या चिन्हों की सहायता से प्रदर्शित किया जाता है।**
- **इस विधि में जिन वस्तुओं का वितरण दिखलाना होता है, उन सब के अलग-अलग चिन्ह या प्रतीक निश्चित करके उन्हें मानचित्र में यथा स्थान प्रदर्शित किया जाता है।**
- **इन का संकेत लिखना आवश्यक होता है।**
- **इस मानचित्र को बनाते समय प्रतीक के आकार एवं आकृति की एक समानता को ध्यान में रखा जाता है।**

इन्हें तीन वर्गों में विभाजित किया जा सकता है।

- A. ज्यामितीय प्रतीक विधि
- B. चित्रमय प्रतीक विधि
- C. मूलाक्षर प्रतीक विधि

**A.**

- **ज्यामितीय प्रतीक विधि**

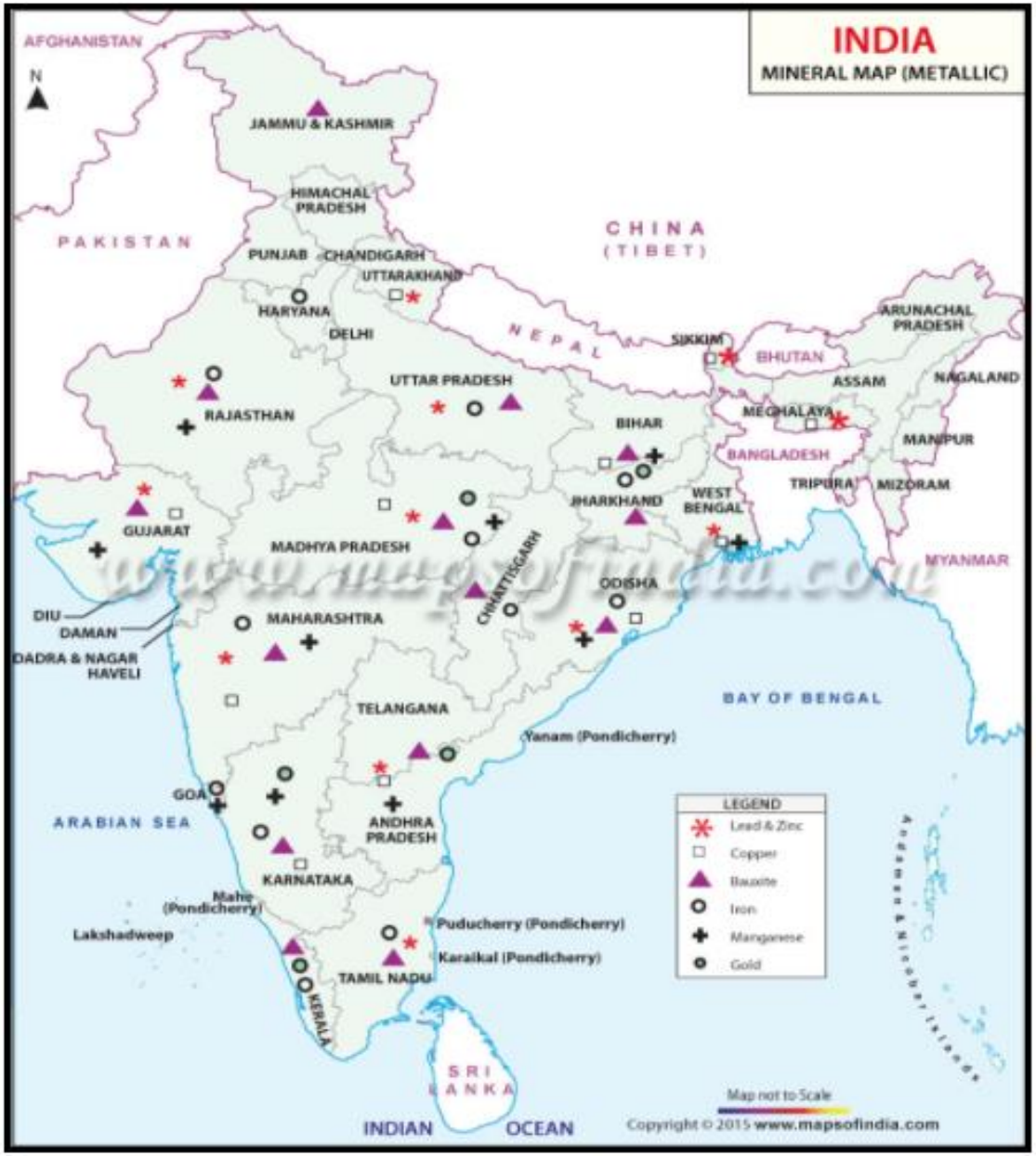


(Source: http://www.mapsofindia.com/)

- **B. चित्रमय प्रतीक विधि**

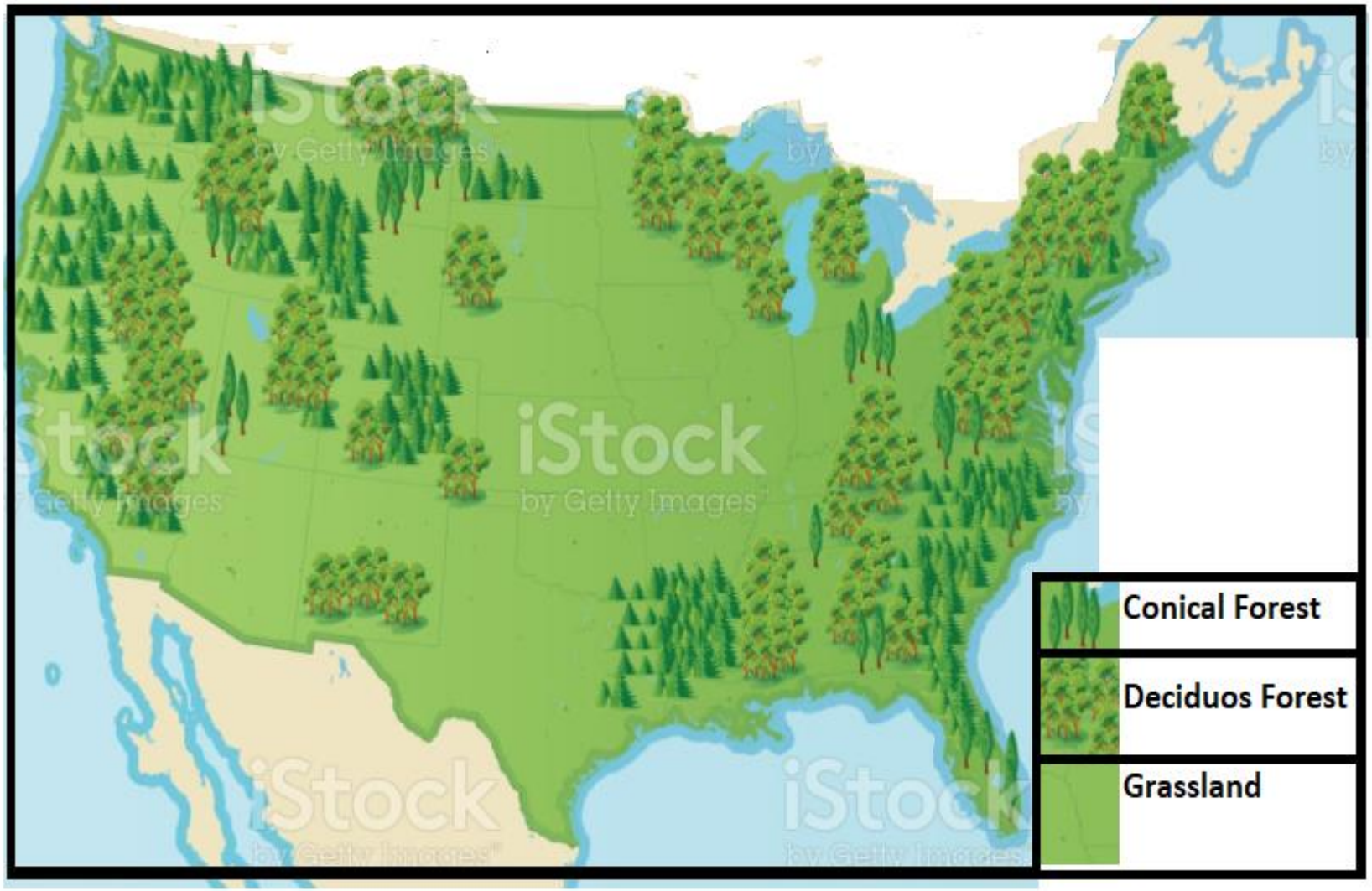

- **C. मूलाक्षर प्रतीक विधि**

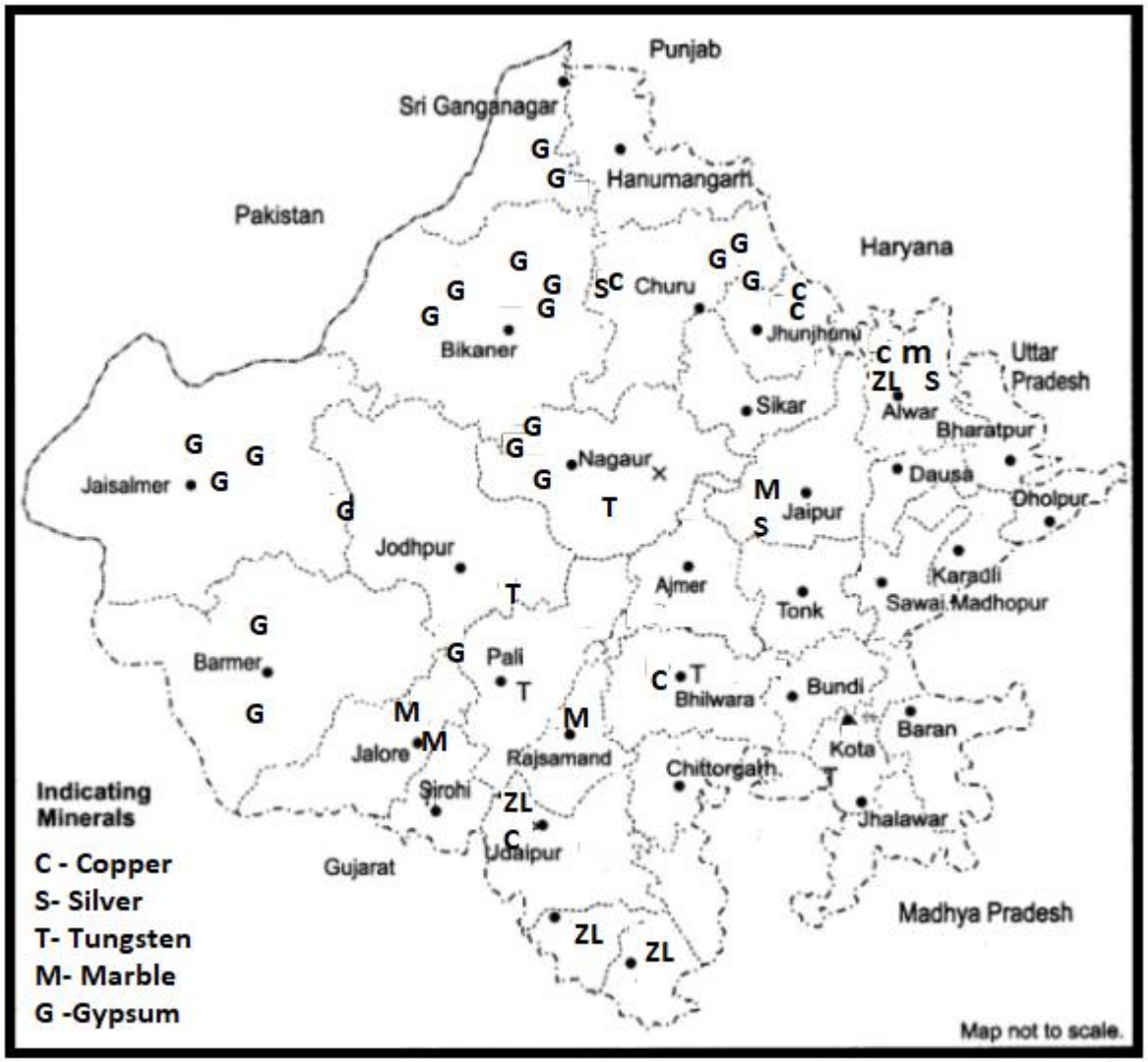

- **5. विधि नामांकन विधि (Naming Method)**

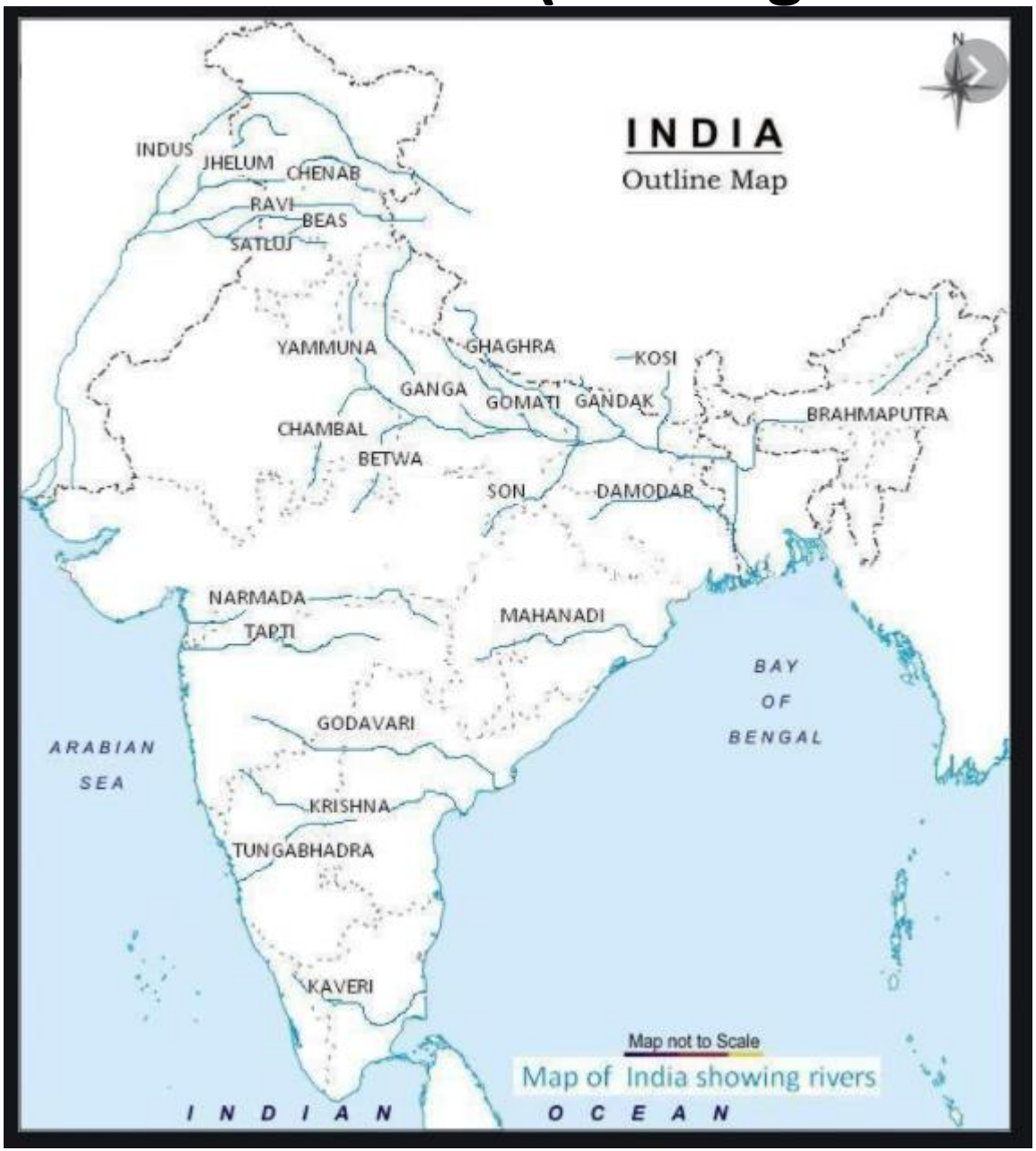

# B. Quantitative Method

## 1. Choropleth Method

A **choropleth map** :choros 'area/region' and plethos 'multitude') is a type of thematic **map** in which a set of pre-defined areas is colored or patterned in proportion to a statistical variable that represents an aggregate summary of a geographic characteristic within each area, such as population .

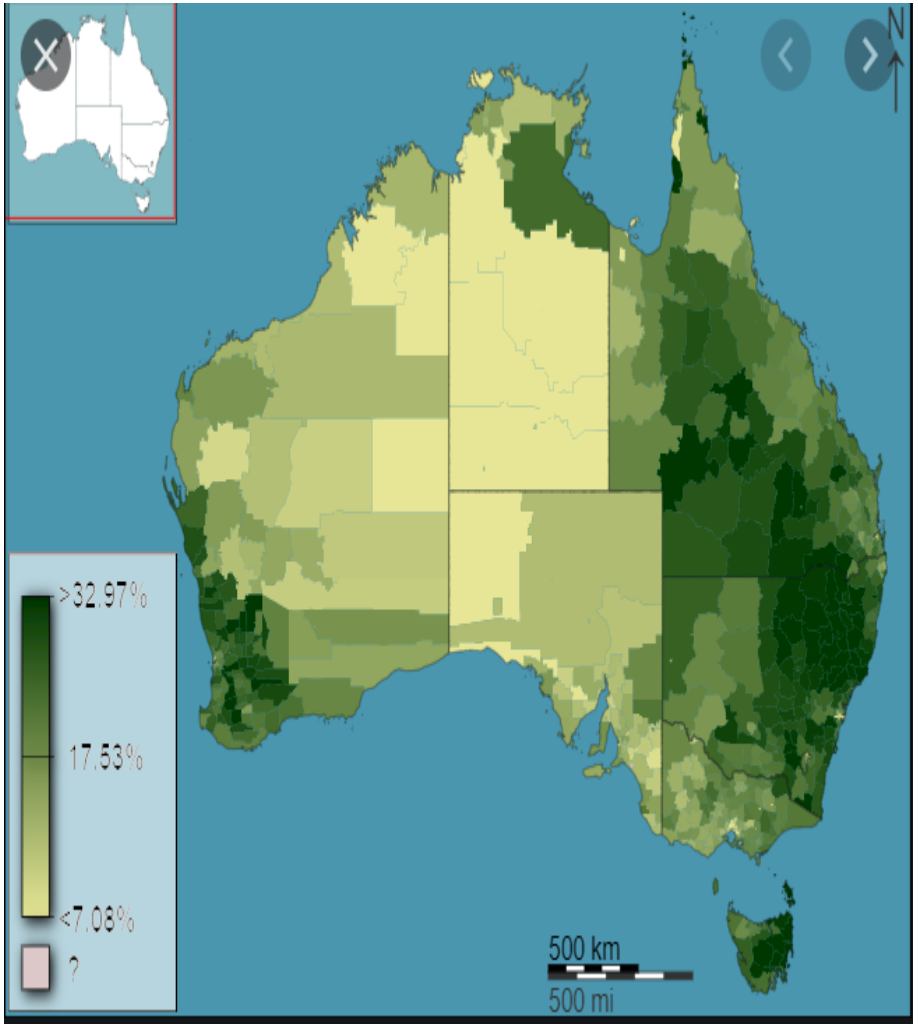

**2. Isopleth maps** simplify information about a region by showing areas with continuous distribution. **Isopleth maps** may use lines to show areas where elevation, temperature, rainfall, or some other quality is the same; values between lines can be interpolated.

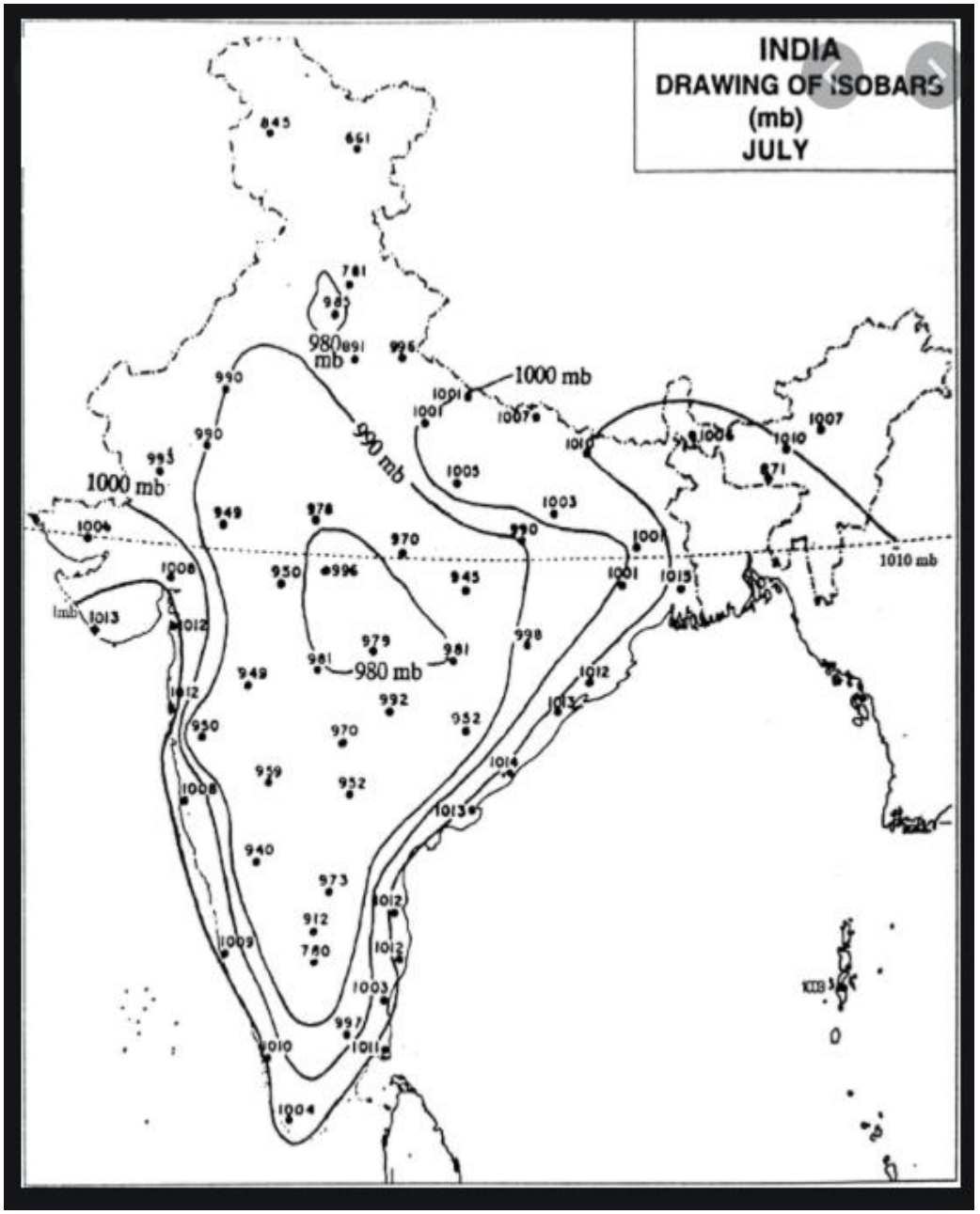

- **Contour line: Joins points of the same height above ground.**
- **Isobath: Joins points of the same depth below water.**
- **Isobar: Joins points with the same atmospheric pressure.**
- **Isotherm: Joins points with the same temperature.**
- **Isobathytherm: Joins points with the same temperature under water.**
- **Isotach : A line representing points of equal wind speed.**
- **Isothere : A line representing points of equal mean summer temperature.**
- **Isotherm : A line representing points of equal temperature.**
- **Isotim : A line representing points of equal transport costs from the source of a raw material.**

# धन्यवाद

Disclaimer: The content displayed in the PPT has been taken from variety of different websites and book sources. This study material has been created for the academic benefits of the students alone and I do not seek any personal advantage out of it.